प्रातःक्लास 5/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चे किसके पास आते हो रूहानी बाप के पास। समझते हो हम शिवबाबा के पास जाते हैं। यह भी जानते हो शिवबाबा सभी आत्माओं का बाप है। यह भी बच्चों को निश्चय होना चाहिए वह सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरू भी है। सुप्रीम को परम कहा जाता है। उस एक को ही याद करना है। नज़र से नज़र मिलाते हैं ना। गायन है ना नज़र से निहाल स्वामी। कींदा सद्गुरू। उनका भी अर्थ चाहिए ना। नज़र से निहाल किसको? ज़रूर सारी दुनियां के लिए कहेंगे; क्योंकि सर्व का सद्गति दाता है। सर्व को इस पतित दुनियां से ले जाने वाला है। अभी नज़र किसकी? क्या यह आँखें? नहीं। तीसरी आँख मिलती है ज्ञान से। जिससे आत्मा जानती है यह हम सभी आत्माओं का बाप है। बाप आत्माओं को राय देते हैं। बच्चों मुझे याद करो। शरीर को नहीं, आत्माओं को समझाते हैं। आत्माएं ही पतित तमोप्रधान बनी है। बाप कहते हैं अभी यह तुम्हारा 84 वां जन्म पूरा होता है। वा यह नाटक पूरा होता है। पूरा होना भी चाहिए ज़रूर। हर कल्प पुरानी सो नई बनती है। नई सो पुरानी होती है। नाम भी अलग–2 है। नई दुनियां का नाम है सतयुग। बाप ने समझाया है पहले तुम सतयुग में थे फिर पुनर्जन्म लेते–2 84 जन्म बिताये। अभी तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बन गई है। बाप को याद करो तो निहाल हो जावेंगे। बाप सम्मुख कहते हैं मेरे को याद करो। कौन कहते हैं? परमपिता परमात्मा बाप कहते हैं बच्चे आत्मा अभिमानी बनो। देह अभिमानी न बनो। आत्म अभिमानी बन मेरे में तुम नज़र लगाओ। मैं तेरे में नज़र लगाऊँ। तुम भी नज़र लगाओ तो (नि)हाल हो जावेंगे। बाप को याद करते रहो। इसमें कोई तकलीफ तो है नहीं। आत्मा ही पढ़ती है पार्ट बजाती है। फिर वही पार्ट रिपीट करना है। 84 जन्मों का पार्ट बजाते–2 सीढ़ी उतरते–2 हमारी आत्मा पतित बन गई है। अभी कुछ भी दम न रहा है। अभी तुम निहाल नहीं कंगाल हो। फिर निहाल कैसे बनें। यह अक्षर भक्ति मार्ग के हैं जिस पर बाप बैठ समझाते हैं। वेदों–शास्त्रों, चित्रों आदि पर भी समझाते हैं। नये चित्र भी बनवाते हैं। जो ज्ञान उनमें हैं उस पर चित्र बनाते हैं। कैसे सो तो बच्चे समझ गये। तुमने यह चित्र बनाई है ना श्रीमत पर। आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं। है सभी मिट्ठी, पत्थर आदि के। जो चित्र आसुरी मत पर बनाये हैं उनका ऑक्युपेशन कुछ भी नहीं जानते। बाप आकर सभी बच्चों को समझाते हैं यह पढ़ाई है भगवानुवाच है तो उनकी कॉलेज हो गई ना। स्टूडेन्ट जानते हैं यह फलाना टीचर। यहां तुम बच्चे भी जानते हो यह बेहद का बा(प) पढ़ाते हैं जो एक ही बार आकर ऐसी वण्डर फुल पढ़ाई पढ़ाते हैं। इस पढ़ाई और उस पढ़ाई में रात–दिन का फ़र्क है। वह पढ़ाई पढ़ते–2 राम में पड़ जाते हैं। इस पढ़ाई से दिन में चले जाते हैं। आसुरी पढ़ाई से दुर्गति होती है। ईश्वरीय पढ़ाई से सद्गति होती है। यह तुमको अभी पता पड़ता है। वह पढ़ाईयां तो जन्म–जन्मांतर पढ़ते आये हैं। इसमें तो बाप साफ बताते हैं आत्मा जब पवित्र होंगी तब ही धारणा होगी। कहते हैं ना शेर का दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। तुम बच्चे समझते हो हम अभी सोने का बर्तन बन रहे हैं। होंगे तो मनुष्य ही; परन्तु आत्मा को सम्पूर्ण पवित्र बनाना है। 24 करैट सोना बनना है। सोना पहले 24 करैट था। अभी 9 करैट हो गया है। आत्मा की ज्योति जगी हुई थी वह बुझ गई। एकदम सारी बुझ नहीं जाती कुछ थोड़ा रहता है। कोई मरता है तो दीवा जलाते हैं ना। बुझ न जाये; इसलिए घृत डालते रहते हैं। जिस पर ज्योत जगी रहती है। वह है अल्पकाल की बात। यह है बेहद की बात। तुम आत्माओं की अभी ज्योत जगी है। ज्योत जागी हुई औ(र) बुझी वालों में फ़र्क है ना। ज्योत कैसे जगे कैसे पद पाया यह बाप बैठ कर बतलाते हैं। बच्चों को कहते हैं तुम सिर्फ़ मुझे याद करो। जो मुझे अच्छी तरह याद करेंगे मैं भी उनको याद करूँगा। यह भी बच्चे जानते हैं बरोबर नज़र से निहाल करने वाला बाप स्वामी है। इनकी आत्मा भी निहाल होती है। जैसे तुम्हारी ज्योत बुझ गई थी वैसे इनकी भी बुझ गई थी। तुम सभी परवाने हो। उनको शमा भी कहते हैं। कोई तो परवाने फेरी पहनने आते हैं कोई अच्छी रीत पहचान लेते हैं तो जीत जी

मर जाते हैं। कोई सिर्फ़ फेरी पहन चले जाते हैं। फिर कब आते हैं। फिर चले जाते हैं। इ(स) संगमयुग का ही सारा गायन है। इस समय जो कुछ चलता है उनके फिर बाद में शास्त्र बनाते हैं। बाप तो एक ही बार आकर तुमको वर्सा देकर जाते हैं। बेहद का बाप सिर्फ़ बेहद का वर्सा देंगे ना। यह तो गायन भी है। 21 पीढ़ी सतयुग में वर्सा कौन देते हैं। भगवान रचयिता ही वर्सा देते हैं रचना को। याद भी उनको करते हैं। वही बाप भी है टीचर भी है। स्वामी सद्गुरू भी उनको ही कहते हैं। भल तुमको किसको स्वामी कहते हो, सद्गुरू भी कोई को कहते होंगे; परन्तु सत्य तो एक ही बाप है। सत्य माना ट्रुथ । ट्रुथ हमेशा गॉड को कहा जाता है। मनुष्य को नहीं। वह सत्य क्या आकर करते हैं। वही पुरानी दुनियां को सच खण्ड बना देते हैं। दूसरा कोई बना न सके। जो सच्च खण्ड था वही अभी झूठ खण्ड है। सच्च खण्ड के लिए हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। सच्च खण्ड था अभी नहीं है। फिर पुरुषार्थ करते हैं। जो सच्च खण्ड था। तो बाकी इतने सब खण्ड थे नहीं। वहां यह सभी होते ही नहीं। यह सभी पीछे आये हैं। सच्च खण्ड का किसको पता नहीं है। बाकी जो अभी खण्ड हैं उन्हों का तो सभी को मालूम है। अपने–2 धर्म के स्थापक को जानते हैं। बाकी सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी को और इस संगमयुगी ब्राह्मण कुला को कोई ही नहीं जानते। प्रजापिता ब्रह्मा को भी कोई नहीं जानते। कहते हैं हम ब्राह्मण ब्रह्मा के औलाद हैं; परन्तु बाप समझाते हैं वह है कुख वंशावली। तुम हो मुख वंशावली। वह कुख वंशावली है अपवित्र। तुम मुख वंशावली हो पवित्र। तुम मुख वंशावली बन फिर तुम छी–2 दुनियां रावण राज्य से चले जाते हो। वहां रावण राज्य होता ही नहीं। अभी तुम चलते हो नई दुनियां में। उनको कहते ही हैं वायसलेस वर्ल्ड। वर्ल्ड ही नई और पुरानी होती है। कैसे होती है यह भी तुम जान गये हो। दूसरा ... कोई के बुद्धि में नहीं। लाखों वर्ष की बात कोई के बुद्धि में याद भी न रहे। यह तो थोड़े ही समय की बात है। बाप बच्चों को समझाते हैं। वह भक्ति मार्ग के लम्बी–चौड़ी झूठे गपोड़े हैं। बाप आकर कम्पलेन करते हैं। मैं आता ही तब हूँ जब खास भारत में ग्लानी होती है। दूसरे जगह तो किसको भी पता नहीं है। निराकार बाप क्या चीज़ है। बड़ा–2 लिंग बनाकर रख दिया है। बच्चों को समझाया है आत्मा कब छोटी–बड़ी नहीं होती। आत्मा तो अविनाशी है। साइज़ छोटा–बड़ा होता नहीं। जैसे आत्मा अविनाशी है वैसे बाप भी अविनाशी है। वह है परम सुप्रीम आत्मा। सुप्रीम अर्थात् जो सदैव पवित्र और निर्विकारी है। तुम आत्मांए भी निर्विकारी थे। निर्विकारी दुनियां थी। उनको कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनियां। फिर ज़रूर पुरानी होती है। कला कम होती जाती है। दो कला कम चन्द्रवंशी राज्य था। फिर दुनियां पुराना बनती जाती है। पीछे और और खण्ड आते–जाते हैं। उनको कहा जाता है वायप्लाट। उन्हों के साथ तुम्हारा को(ई) कनेक्शन नहीं; परन्तु मिक्सअप हो जाते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार जो कुछ होता है वह फिर होगा। जैसे एक आया और कितने को बुद्ध धर्म में ले गया। धर्म ही बदल दिया। हिन्दुओं ने अपना धर्म आपे ही बदला है; क्योंकि कर्म भ्रष्ट होने से धर्म भ्रष्ट भी हो जाते हैं। कर्म भ्रष्ट हो गये हैं ना। वाममार्ग में चले गये। जगरनाथ के मन्दिर में भल गये होंगे; परन्तु कोई का ख़्याल नहीं आता। खुद विकारी है तो उन्हों को भी विकारी देखते हैं। यह नहीं समझते हैं कि देवताएं फिर वाम मार्ग में गये हैं। उन्हों के यह चित्र हैं। देवी–देवता नाम तो बहुत अच्छा है। हिन्दु तो हिन्दुस्तान का नाम है। यह फिर अपन को हिन्दु कह देते हैं। कितनी भूल है; इसलिए बाप कहते हैं यदा यदा हि धर्मस्य..... बाप भारत में ही आते हैं। ऐसे तो नहीं कहते हैं कि मैं हिन्दुस्तान में आता हूँ। यह है ही भारत। हिन्दुस्तान वा हिन्दु धर्म है नहीं। मुसलमानों ने हिन्दुस्तान नाम रखा है। यह भी ड्रामा की नूँध है। अच्छी रीत समझाना चाहिए। यह भी नॉलेज है ना पुनर्जन्म लेते–2 वाम मार्ग में आते–2 भ्रष्टाचारी विकारी बन गये हैं। फिर उन्हों को आगे कहते हैं आप सम्पूर्ण निर्विकारी हो हम विकारी पापी हैं। और कोई खण्ड वाले ऐसे नहीं कहेंगे कि आप सम्पूर्ण निर्विकारी हम विकारी हैं। हमारे

मैं कोई गुण नहीं हैं। ऐसे कहते कब सुना न है। सिक्ख लोग भल ग्रंथ के आगे बैठते हैं; परन्तु ऐसे नहीं कहेंगे नानक निर्विकारी है विकारी है। नानक पंथी कंगन लगाते हैं। वह है निर्विकारीपने की निशानी; परन्तु विकार बिगर रह नहीं सकते। झूठी निशानी दे रखी है। जैसे हिन्दुओं ने जनेऊ पहना है ना। वह भी वास्तव में पवित्रता की निशानी है। आगे जनेऊ बहुत पहनते थे। बहुत रसम–रिवाज़ है। आजकल तो कुछ भी है नहीं। धर्म बगैरह कुछ भी चलता थोड़े ही है। धर्म ही चट हो गया है। देवी–देवता धर्म वाले ही हिन्दु बन गये हैं। एक ही भारत है जो सभी धर्मो को छुट्टी देते हैं; क्योंकि अपने धर्म को नहीं जानते हैं। वास्तव में हिन्दुधर्म तो है नहीं। क्या–2 हो रहा है। बाप बैठ समझाते हैं। यह है पुरानी दुनियां। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं। किसके ध्यान में भी नहीं आता। यह भक्ति मार्ग चल रहा है। उनको कहा जाता है भक्ति कल्ट, ज्ञान कल्ट सतयुग में हो जाता। सतयुग में सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं। यहां तो हो न सके। देवताओं को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। कलियुग में तो सम्पूर्ण निर्विकारी हो न सके। सन्यासियों का धर्म ही अलग है। वह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। प्रवृत्ति मार्ग की स्थापना तो बाप ही करते हैं। बाकी इन सभी के गुरू हैं निवृत्ति मार्ग वाले। उनसे उन्हों का ज़ोर जास्ती हो गया है। सन्यासी है ना। संस्कृत भी पढ़ते हैं। वेद उपनिषद् आद भी पढ़ते हैं। बाप कहते हैं यह सभी हैं शास्त्रों की भूसा। जो कुछ तुमने पढ़ा है इन सभी से मैं थोड़े ही मिलता हूँ। मैं तो जब आता हूँ सभी को नज़र से निहाल कर देता हूँ। गायन भी है ना नज़र से निहाल स्वामी कींदा सद्गुरू। यहां तुम क्यों आये हो? निहाल बनने, विश्व का मालिक बनने। बाप को याद करो तो निहाल बन जावेंगे। ऐसे कब कोई कहेंगे नहीं कि ऐसा करने से तुम यह बन जावेंगे। बाप ही कहते हैं तुमको यह बनना है। यह ल.ना. कैसे बने कोई को पता नहीं है। तुम बच्चों को तो सभी कुछ बतलाते हैं। यही 84 जन्म ले पतित बने हैं। फिर तुमको यह बनाने आया हूँ। बात तो बड़ी सीधी है। बाप अपना परिचय भी देते हैं। नज़र से निहाल.....यह किसके लिए कहेंगे वह गुरू लोग तो ढेर हो गये हैं। अबलाएं माताएं भोली है। तुम भी सभी भोलेनाथ के बच्चे हो। शंकर की तो बात ही नहीं। आँखें खोले और विनाश हो जाये। यह भोलापना है क्या। ऐसे भी नहीं। ऐसे नहीं कि बाप कहेंगे कि विनाश करो। यह भी पाप हो जाये। बाप कब ऐसा काम कर न सके। विनाश तो कोई चीज़ से होगा ना। बाप ऐसे डायरैक्शन नहीं देते। यह तो सभी सायंस निकालते रहते हैं। यह भी आसुरी विचार है उन्हों की। जानते हैं हम अपने कुल का आपे ही विनाश करते हैं। बांधे हुए हैं। छोड़ नहीं सकते। उन्हों की भी बड़ी आजीविका है। नाम कितना होता है। एरोप्लेन में मून आदि में जाते हैं। फायदा तो कुछ भी नहीं। अभी तुम बच्चे जानते हो, देखते हो। बाप भी तुम्हारी आत्मा को देखते हैं। यह शरीर तो विनाशी है। आत्मा ही अविनाशी है। इस हालत में तो आत्म अभिमानी बनना चाहिए। मीठे2 बच्चों , तुम भी बाप से नज़र लगाओ। हे आत्मा अपने बाप को याद करो तो निहाल हो जावेंगे। बाप कहते हैं जो मुझे याद करते हैं मैं भी उनको याद करता हूं। जानता हूं यह मेरे बच्चे हैं। जो मुझे याद करते हैं मैं भी उनको याद करता हूं। जो मेरे लिए सर्विस करते हैं मैं भी उनको जास्ती याद करता हूं। तो उनको बल मिले। यहां सभी बैठे हैं। जो निहाल हो जावेंगे वह ही यह बनेंगे। कोई राजा , कोई प्रजा बनेंगे। बाप तो सभी के चलन को जानते हैं। बाप को ही नहीं याद करते हैं तो फिर बाबा उनको कैसे याद करेंगे। गायन है ना या(द) करो तो मैं भी याद करुंगा। और संग तोड़ एक संग .....। एक तो है निराकार। आत्मा भी निराकार है। निराकार बाप कहते हैं एक को याद करो। तुम खुद ही कहते हो हे पतित–पावन.....। यह किसको कहा? क्या ब्रह्मा को, विष्णु को ,शंकर को? नहीं। पतित–पावन तो एक ही है। वह कब भी पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। वह तो पावन ही है। उनको कहा जाता है सर्वशक्तिवान। फिर अथॉर्टी। इसका भी अर्थ कोई नहीं समझते। बाप ही सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं। और जो भी

शास्त्र आदि हैं सभी को जानते हैं। वह सन्यासी लोग फिर अपन को अथॉर्टी समझते हैं। इसलिए उन्हों को टाइटल्स भी मिली है। बाप को तो पहले से ही टाइटिल मिला हुआ है। वह कोई पढ़कर थोड़े ही लेते हैं। तुमको समझाते हैं। यह कोई वेद–शास्त्र आदि पढ़े हैं क्या? भक्ति मार्ग की कितनी सामग्री है। ढेर के ढेर शास्त्र हैं। बाप फर्क बैठ बताते हैं। कितना तीर्थों आदि पर ,मेलों आदि पर जाते हैं। मनुष्य कितना दुःखी होते हैं। तंग होते हैं। बाबा कोई तकलीफ बच्चों को नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों। तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। सतोप्रधान नई सृष्टि थी। फिर उनको तमोप्रधान बनना ही है। कोई भी चीज सदैव के लिए नहीं रहती है। हर चीज सतोप्रधान, सतो,रजो,तमो होती ही है। तो बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। और फिर कहते हैं औरों को भी समझाओ। एक बाप को याद करो। और संग तोड़ एक को याद करो। कितने मित्र–सम्बंधी आदि हैं। कोई को भी याद न करो। शरीर को भी नहीं। तुम रुहानी बच्चे हो तो एक रुहानी बाप को ही याद करो। यही मेहनत है। फिर कोई नाम–रूप याद न आवेगा। कहीं फंसेंगे नहीं। बाप एक ही बार आकर समझाते हैं। यह सभी का अंतिम जन्म है। इस मृत्युलोक में यह अंतिम जन्म है। पुरानी दुनियां सो फिर नई बनेगी। नई सृष्टि में यह देवताएं होते हैं। डिटीज्म है ना। यह भी कब था यह नहीं जानते। किसने स्थापन किया ,कुछ भी याद न है। सभी भूल गए हैं। बाप कहते हैं तुम सभी एक्टर्स हो ना। एक्टर्स को तो ड्रामा का पता होना चाहिए। बेहद का बाप आकर तुम बच्चों को समझाते हैं। अभी धारणा करो। फिर हरेक अपने से पूछो हमको कहां तक धारणा है। धारण कर फिर औरों को धारण कराना है। अपने अंदर पूछना है मैं बाबा को सारे दिन में कितना याद करता हूं। बाबा जिससे हमको विश्व की बादशाही मिलती है उनको तो श्वासोंश्वांस याद करना चाहिए। अगर उनको याद न करेंगे तो बाप से वर्सा कैसे ले सकेंगे? रोज रात्रि को अपना पोतामेल लो। तुम व्यापारी हो ना। बहुत व्यापारी लोग रोज रात को सारा पोतामेल निकालते हैं। कितना खर्च हुआ, कितना फायदा हुआ। बाप राय तो बहुत अच्छी देते हैं। दिल से पूछो हम कितना याद करते हैं। जो बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं उस बाप ने कहा है मुझे याद करो। उनका कहना न मानते तो गोया नाफरमानबरदार ठहरे। आज्ञा का उल्लंघन करेंगे तो नतीजा क्या होगा? नापास हो पड़ेंगे। अभी नहीं समझते हो आगे चल करना पड़ता नहीं तो अपनी अवस्था कैसे समझ सकेंगे? यह तो अच्छा ही है। पाप किया हुआ होगा तो अटेंशन पर रहेगा। बाप कहते हैं किसको दुःख देते हो तो सौणा डन्ड पड़ जावेगा ;क्योंकि मेरी ग्लानी करते हो ना। तो सौणा डन्ड हो जावेगा। सुनावेंगे तो बच जावेंगे। नहीं तो वृद्धि को पाता रहेगा। सभी बातें बाप भिन्न रीति से समझाते रहते हैं। मोस्ट बिलवेड बाप है। उनको याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाप को याद करना तो अच्छा ही है। चार्ट रखो। आज के दिन मैं किसको दुःख तो नहीं दिया। मनसा,वाचा,कर्मणा। कोई भी विकार तब आता है जब देहअभिान में आते हैं। देही अभिमानी होकर रहे तो कब भी आवेंगे नहीं। यह सभी बातें समझने की हैं। रोज2 बाप समझाते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ करते रहते हैं। कल्प पहले मिसल यह तो कुछ भी नहीं जानता था। यही फिर सभी से पावन फिर सभी से पतित बनते हैं। बाप कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अंत में वानप्रस्थ अवस्था में आकर मैं प्रवेश करता हूं। वाणी से परे जाने लिए गुरू करते हैं ; परंतु वह सच्चा गुरू तो है नहीं। तुम वाणी से परे जाने के लिए सच्च2 पुरुषार्थ कर रहे हैं। सभी को जाना है। फिर नम्बरवार आवेंगे। हर एक पुरुषार्थ करते हैं। हम पढ़कर अच्छा पद पावें। बाप कहते हैं सारी दुनियां वानप्रस्थी है। पुरुषार्थ करे, न करे। तुम हो सच्चे2 वानप्रस्थ। सारी दुनियां ,सभी कुछ बदल जावेगा। अच्छा, मीठे–मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप दादा का यादप्यार ,गुडमार्निंग। मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।